IJAER/January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

# महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

**Asha Choudhary**
Research Scholar in Political Science
Maharshi Arvind University, Jaipur(Rajasthan).

**Dr. pritee Verma**
Research Guide , Assistant Professor, Department of Humanities & Social Science
Maharshi Arvind university, Jaipur, (Rajasthan)

*सार*

*गांधी देश के लिए एक प्रदर्शन प्रबंधक और परिवर्तन के लिए एक सर्वोच्च व्यावहारिक नेता थे। उनका मानना था कि सत्य, सहिष्णुता, त्याग, आनंद और अत्याचार की अहिंसक अस्वीकृति ही सफल जीवन का सार है। लोगों को संगठित करने, लोगों को एक साथ लाने के लिए विचारों की जांच करने और उत्पादन करने के गांधी के तरीके वैश्विक व्यापार, वाणिज्य और सूचना प्रौद्योगिकियों द्वारा बनाए गए वर्तमान तनाव को कम करने के लिए महत्वपूर्ण सबक हैं। गांधीजी ने सभी निर्णयों को सत्य के विपरीत आंका। सत्य को विचार, शब्द और कार्य में पारदर्शिता और किसी व्यक्ति में उपलब्ध योग्यता और कौशल के कच्चे माल के विरुद्ध सीमाओं और संभावनाओं को देखने के साहस के रूप में अनुवादित किया जा सकता है।*

***मुख्य शब्द:*** *महात्मा गांधी,* ***आर्थिक विचार,***

## परिचय

विकासशील दुनिया में राज्य की इस महत्वपूर्ण भूमिका की विशालता इस तथ्य से परिलक्षित होती है कि आधुनिक राज्य अन्य सामाजिक संरचनाओं, संस्थानों और संगठनों के संबंध में शक्ति, धन और प्रभुत्व में लेविथान है। विकासशील दुनिया के कई हिस्सों में संवैधानिक सरकारों के टूटने और इसके परिणामस्वरूप संवैधानिकता, नागरिक स्वतंत्रता और संस्थानों की बहुलता की अनुपस्थिति का यह एक प्रमुख कारण है। उस अवधि के दौरान जब गांधी ने भारत में राष्ट्रवादी संघर्ष का नेतृत्व किया, प्रथम विश्व युद्ध में ग्रेट ब्रिटेन की जीत के बाद औपनिवेशिक राज्य अपने चरम पर पहुंच गया था। उन्होंने अगले तीन दशकों तक इस राज्य का सामना किया और इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की। अपने अराजकतावादी झुकाव और पश्चिम की आधुनिक औद्योगिक सभ्यता को पूरी तरह से अस्वीकार करने के बाद, उन्होंने राज्य की गतिविधि को प्रतिबंधित करके और जमीनी स्तर के विकास पर ध्यान केंद्रित करके भारत के लिए एक नया रास्ता तैयार किया। इस प्रकार, उनका आदर्श, पश्चिमी राजनीतिक परंपराओं में प्रस्तुत राज्य की विभिन्न अवधारणाओं से बहुत दूर था।

मोहनदास करमचन्द गांधी जन्म: 2 अक्टूबर 1869 – निधन: 30 जनवरी 1948 जिन्हें महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है भारत एवं भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा (के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार करने के समर्थक अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत सहित पूरे विश्व में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें संसार में साधारण जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा 'महान आत्मा' एक सम्मान सूचक शब्द है। गांधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया था। एक अन्य मत के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने 1915 मे महात्मा की उपाधि दी थी। तीसरा मत ये है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 12 अप्रैल 1919 को अपने एक लेख मे उन्हें महात्मा

कहकर सम्बोधित किया था। । उन्हें बापू (गुजराती भाषा में बापू अर्थात् पिता (के नाम से भी स्मरण किया जाता है। एक मत के अनुसार गांधीजी को बापू सम्बोधित करने वाले प्रथम व्यक्ति उनके साबरमती आश्रम के शिष्य थे,

### राज्य और हिंसा पर गांधी

गांधीजी के आकलन में राज्य) पश्चिमी प्रकार (केंद्रित रूप में हिंसा का प्रतीक था। नागरिकों से निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए राज्य) जिसका अर्थ है उसका अधिकार (निर्दयतापूर्वक जबरदस्ती या हिंसक उपाय लागू करता है।

एक बार उन्होंने कहा था, "व्यक्ति के पास एक आत्मा है लेकिन राज्य एक स्मृतिहीन मशीन है, बासी को कभी भी उस हिंसा से दूर नहीं किया जा सकता है जिसके कारण उसका अस्तित्व है"। दूसरे शब्दों में, गांधी राज्य और हिंसा या जबरदस्ती दोनों को पर्यायवाची मानते थे। वह आगे कहते हैं कि राज्य तो है लेकिन किसी भी रूप में हिंसा या जबरदस्ती की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने दक्षिण अफ़्रीका में अनुभव प्राप्त किया कि राज्य को अधिक से अधिक शक्ति देने का अर्थ है अधिक से अधिक हिंसा या अधिक मात्रा में ज़बरदस्ती। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर दक्षिण अफ्रीका की श्वेत सरकार ने भारी शक्ति हासिल कर ली और इसके कारण क्रूर प्रशासन, शोषण और व्यक्तियों की स्वतंत्रता में कटौती हुई।

### उद्देश्य

1. गाँधी जी के आर्थिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन।
2. गाँधी जी के विभिन्न विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।

### गांधीजी के अनुसार महिलाओं के अधिकार

गांधी महिलाओं के लिए समान अधिकारों की बात करते हैं। वह चाहते थे कि महिलाएँ और पुरुष एक-दूसरे के पूरक बनें और इस बात पर ज़ोर देते थे कि महिलाएँ और पुरुष अलग-अलग हैं लेकिन उनकी भिन्नताएँ महिलाओं की अधीनता और उत्पीड़न का आधार नहीं हो सकतीं। वह चाहते थे कि विवाह दो समान लोगों के बीच साझेदारी हो। उन्होंने पुरुषों की नकल करने पर महिलाओं की निंदा की और महिलाओं से पुरुषों को खुश करने की अपनी आदतों से बाहर निकलने की अपील की। 1927 में सीलोन, अब श्रीलंका में महिलाओं को संबोधित करते हुए

ऐसा क्या है जो एक महिला को एक पुरुष से ज्यादा खुद को सजाने में सक्षम बनाता है? मुझे स्त्री मित्रों ने बताया है कि वह पुरुष को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करती है। ठीक है, मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम दुनिया के मामलों में अपनी भूमिका निभाना चाहते हो, तो तुम्हें मनुष्य को खुश करने के लिए खुद को तैयार करने से इनकार करना होगा। यदि मैं एक महिला के रूप में जन्म लेती, तो मैं पुरुष के इस दावे के खिलाफ विद्रोह कर देती कि महिला का जन्म उसके खेलने की वस्तु के रूप में हुआ है।

### आधुनिक युग में गांधी की विरासत

महात्मा गांधी के बारे में कोई भी बातचीत आमतौर पर उनके व्यक्तित्व और आदर्शों के प्रति एक निश्चित मात्रा में विस्मय के साथ शुरू होगी, और यह शुरुआत करने का एक स्वाभाविक और उचित तरीका है। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य, अस्पृश्यता और रंगभेद की सदियों पुरानी प्रथाओं और बहुत लोकप्रिय पश्चिम-केंद्रित आधुनिकीकरण के खिलाफ लड़ने के लिए कई अन्य महान सिद्धांतों के साथ-साथ अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह पर धैर्यपूर्वक विश्वास किया और उनका पालन किया। , ऐसी श्रद्धाएँ पूर्णतः अप्राकृतिक नहीं हैं। आदर्श स्थिति यह होगी कि महात्मा गांधी, जिन्हें सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक माना जाता है, एक दार्शनिक, एक राजनीतिक कार्यकर्ता, एक राजनीतिज्ञ और, इसके अलावा, एक समाज सुधारक के रूप में उनकी भूमिकाओं से कम न हों

**पूंजी के रूप में कार्य और कौशल**

गांधी के अनुसार प्रयास और प्रतिभा पैसे के अधीन नहीं थे, जिन्होंने इस विचार पर जोर दिया कि प्रयास और कौशल भी समान रूप से शक्तिशाली थे। यदि पैसा शक्ति है तो प्रयास भी शक्ति है। इन दोनों में विनाशकारी या नवीन तरीकों से उपयोग किए जाने की क्षमता है। लगभग तुरंत ही, श्रमिक को अपनी शक्ति का एहसास हो जाता है, और वह पूंजीपति का गुलाम बनने के बजाय उसका सह-हिस्सेदार बनने की स्थिति में आ जाता है) गांधी, 1933, पृष्ठ 296)। 1903 में, जब गांधी रेल द्वारा जोहान्सबर्ग से डरबन की यात्रा कर रहे थे, उन्होंने पहली बार रस्किन) 1862) की रचनाएँ पढ़ीं। इन लेखों का अर्थशास्त्र और शिक्षा के बारे में गांधीजी के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री के बारे में उनकी समझ को तीन बिंदुओं) गांधी, 1956) में सारांशित किया गया था। रस्किन, सबसे पहले, यह दावा करते हैं कि व्यक्ति की भलाई समग्र की भलाई में समाहित होती है। यह बात गांधीजी के सोचने के तरीके में पहले ही शामिल हो चुकी थी। दूसरा, रस्किन ने यह कहकर श्रम की गरिमा के प्रति गांधी के समर्पण की ओर ध्यान आकर्षित किया कि नाई और वकील की नौकरी का मूल्य समान है, क्योंकि नाई और वकील दोनों को जीविकोपार्जन का समान अधिकार है। यह श्रम की गरिमा के प्रति गांधी की भक्ति पर जोर देता है। यह रस्किन का दावा था कि काम का जीवन, यानी भूमि जोतने वाले और हस्तशिल्पी का जीवन, जीने लायक जीवन है, यह तीसरा बिंदु था। इसके कारण, श्रम पर गांधीजी के दृष्टिकोण में काफी बदलाव आया।

**रचनात्मक और आलोचनात्मक कल्पना में गांधी :एक सर्वेक्षण**

महात्मा गांधी न केवल एक सार्वभौमिक व्यक्ति हैं, बल्कि अमर भी हैं। भारत के स्वतंत्रता-पूर्व चरण के दौरान, गांधी पहले एक राष्ट्रीय और जल्द ही अत्यधिक राजनीतिक और दार्शनिक महत्व के अंतर्राष्ट्रीय नेता बन गए। गांधीवादी साहित्य सभी कोनों, देशी और विदेशी, में प्रवाहित होने लगा। आज भी साहित्य जगत में गांधी की प्रभावी उपस्थिति बनी हुई है और वास्तव में गांधी की उपेक्षा करने वाला साहित्य आलोचनात्मक ध्यान आकर्षित करता है। हालाँकि आज़ादी के बाद के दौर में उनके व्यवहार में आज़ादी से पहले के दौर की तुलना में बदलाव आया है, फिर भी, यह तय है कि गांधी को लेखन से कभी अलग नहीं किया जा सकता।

**कम आयु में विवाह**

**गांधीजी-कस्तूरबा, पोरबंदर, गुजरात, भारत मेंगांधीजी बच्चों के साथ**

मई १८८३ में साढे १३ वर्ष की आयु पूर्ण करते ही उनका विवाह १४ वर्ष की कस्तूर बाई मकनजी से कर दिया गया। पत्नी का पहला नाम छोटा करके कस्तूरबा कर दिया गया और उसे लोग प्यार से बा कहते थे।] यह विवाह उनके माता पिता द्वारा तय किया गया व्यवस्थित बाल विवाह था जो उस समय उस क्षेत्र में प्रचलित था। परन्तु उस क्षेत्र में यही रीति थी कि

किशोर दुल्हन को अपने माता पिता के घर और अपने पति से अलग अधिक समय तक रहना पड़ता था। १८८५ में जब गान्धी जी १५ वर्ष के थे तब इनकी पहली सन्तान ने जन्म लिया। किन्तु वह केवल कुछ दिन ही जीवित रही। और इसी वर्ष उनके पिता करमचन्द गांधी भी चल बसे। मोहनदास और कस्तूरबा के चार सन्तान हुईं जो सभी पुत्र थे। हरीलाल गान्धी १८८८ में, मणिलाल गान्धी १८९२ में, रामदास गान्धी १८९७ में और देवदास गांधी १९०० में जन्मे। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल और राजकोट से हाई स्कूल किया। दोनों परीक्षाओं में शैक्षणिक स्तर वह एक साधारण छात्र रहे। मैट्रिक के बाद की परीक्षा उन्होंने भावनगर के शामलदास कॉलेज से कुछ समस्या के साथ उत्तीर्ण की। जब तक वे वहाँ रहे अप्रसन्न ही रहे क्योंकि उनका परिवार उन्हें बैरिस्टर बनाना चाहता था।

## विदेश में शिक्षा व विदेश में ही वकालत

अपने १९वें जन्मदिन से लगभग एक महीने पहले ही ४ सितम्बर १८८८ को गांधी यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने और बैरिस्टर बनने के लिये इंग्लैंड चले गये। भारत छोड़ते समय जैन भिक्षु बेचारजी के समक्ष हिन्दुओं को मांस, शराब तथा संकीर्ण विचारधारा को त्यागने के लिए अपनी अपनी माता जी को दिए गये एक वचन ने उनके शाही राजधानी लंदन में बिताये गये समय को काफी प्रभावित किया। हालांकि गांधी जी ने अंग्रेजी रीति रिवाजों का अनुभव भी किया जैसे उदाहरण के तौर पर नृत्य कक्षाओं में जाने आदि का। फिर भी वह अपनी मकान मालकिन द्वारा मांस एवं पत्ता गोभी को हजम.नहीं कर सके। उन्होंने कुछ शाकाहारी भोजनालयों की ओर इशारा किया। अपनी माता की इच्छाओं के बारे में जो कुछ उन्होंने पढा था उसे सीधे अपनाने की बजाय उन्होंने बौद्धिकता से शाकाहारी भोजन का अपना भोजन स्वीकार किया। उन्होंने शाकाहारी समाज की सदस्यता ग्रहण की और इसकी कार्यकारी समिति के लिये उनका चयन भी हो गया जहाँ उन्होंने एक स्थानीय अध्याय की नींव रखी। बाद में उन्होने संस्थाएँ गठित करने में महत्वपूर्ण अनुभव का परिचय देते हुए इसे श्रेय दिया।

## राज्य और हिंसा पर गांधी:

गांधीजी के आकलन में राज्य) पश्चिमी प्रकार (केंद्रित रूप में हिंसा का प्रतीक था। नागरिकों से निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए राज्य) जिसका अर्थ है उसका अधिकार (निर्दयतापूर्वक जबरदस्ती या हिंसक उपाय लागू करता है।

एक बार उन्होंने कहा था, "व्यक्ति के पास एक आत्मा है लेकिन राज्य एक स्मृतिहीन मशीन है, बासी को कभी भी उस हिंसा से दूर नहीं किया जा सकता है जिसके कारण उसका अस्तित्व है"। दूसरे शब्दों में, गांधी राज्य और हिंसा या जबरदस्ती दोनों को पर्यायवाची मानते थे। वह आगे कहते हैं कि राज्य तो है लेकिन किसी भी रूप में हिंसा या जबरदस्ती की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अनुभव प्राप्त किया कि राज्य को अधिक से अधिक शक्ति देने का अर्थ है अधिक से अधिक हिंसा या अधिक मात्रा में ज़बरदस्ती। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर दक्षिण अफ्रीका की श्वेत सरकार ने भारी शक्ति हासिल कर ली और इसके कारण क्रूर प्रशासन, शोषण और व्यक्तियों की स्वतंत्रता में कटौती हुई। उन्होंने एक बार कहा था कि हिंसा पर आधारित राजनीतिक संगठन को कभी भी उनकी स्वीकृति नहीं मिलेगी। बल्कि ऐसे संगठन से वह हमेशा डरता रहता है। पश्चिमी राज्य प्रणाली के बारे में उन्होंने जो महसूस किया, वह उनकी एक टिप्पणी में स्पष्ट रूप से स्पष्ट है, "मैं राज्य की शक्ति में वृद्धि को सबसे बड़े भय के साथ देखता हूं, क्योंकि हालांकि शोषण को कम करके स्पष्ट रूप से अच्छा करते हुए भी यह सबसे बड़ा काम करता है। "वैयक्तिकता को नष्ट करके मानवजाति को नुकसान पहुँचाना जो प्रगति का मूल है।"

- **राज्य की संप्रभुता:**

गांधीजी को एक व्यापक और सुविवेचित राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी। वह एक जन नेता, दार्शनिक और स्वतंत्रता सेनानी थे। विभिन्न मुद्दों और स्थितियों पर उन्होंने राय व्यक्त की जो राजनीतिक सिद्धांत के कुछ पहलुओं का गठन करती है और राज्य की संप्रभुता एक ऐसा सिद्धांत है। पश्चिमी राजनीतिक चिंतन में, राज्य संप्रभुता एक बहुचर्चित सिद्धांत है और बड़ी संख्या में विद्वानों और दार्शनिकों ने इस अवधारणा पर विचार किया है। इनमें बोडिन और हॉब्स प्रमुख हैं।

- **राज्य और समाज:**

हालाँकि गांधी समाज और राज्य के साथ उसके संबंधों पर चर्चा नहीं करते हैं, लेकिन उनके सामान्य दृष्टिकोण और दर्शन को ध्यान में रखते हुए समाज के प्रति उनके दृष्टिकोण के बारे में कुछ निष्कर्ष निकालना मुश्किल नहीं है। व्यक्ति और लोकतंत्र की स्वतंत्रता के अधिकारों के प्रति उनका अत्यधिक प्रेम और हिंसा और जबरदस्ती का कड़ा विरोध यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने समाज को अधिक महत्व और राज्य को कम महत्व दिया।

चूँकि व्यक्ति का समाज के साथ सीधा संबंध होता है, इसलिए समाज के सदस्य के रूप में नैतिकता, नैतिकता, आदर्शों और कई अन्य शाश्वत मूल्यों के बारे में उनके विचार उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं।

**राज्य और राम राज :परिभाषा और स्वरूप**

प्रो.जयंतनुजा बंद्योपाध्याय ने राम राज) शाब्दिक रूप से दैवीय शासन (को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया है :"गांधी के सामाजिक और राजनीतिक विचार के दो स्तरों - आदर्श और व्यावहारिक - के बीच अंतर करना संभव है। पूर्व, जिसे गांधी द्वारा राम राज कहे जाने वाले शुद्ध अराजकता के एक रूप द्वारा दर्शाया गया है, अहिंसा, स्वतंत्रता और समानता के अंतिम मूल्यों की अधिकतम सामाजिक परिणति का प्रतीक है, गांधी के व्यावहारिक विचारों के योग से प्राप्त व्यावहारिक सामाजिक आदर्श ...... जैसा दिखता है। उदारवाद, समाजवाद का एक रूप और सापेक्ष अहिंसा की स्वतंत्रता और समानता का प्रतीक है।

**राज्य और स्वराज की अवधारणाएँ**

गांधी जी के अनुसार, राज्य अपने संकेन्द्रित रूप में हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह आवश्यक है क्योंकि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक है और सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से कार्य करने में नैतिक रूप से असमर्थ है। वह एक ऐसे राज्य की इच्छा रखते हैं जिसमें यथासंभव कम से कम हिंसा और जबरदस्ती का प्रयोग किया जाए और वह चाहते थे कि जहां तक संभव हो व्यक्तिगत कार्यों को स्वैच्छिक प्रयासों द्वारा नियंत्रित किया जाए। राज्य और समाज के बीच अंतर करते हुए वह ऑस्टिनियन अर्थ में पूर्ण राज्य संप्रभुता की धारणा का विरोध करते हैं। वह सीमित राज्य संप्रभुता की वकालत करते हैं क्योंकि यह महज़ राजनीति से भी बढ़कर एक दायित्व है। उनकी स्थिति व्यक्तिगत व्यक्तित्व में उनके विश्वास से मजबूत होती है, जो उनकी इस टिप्पणी से स्पष्ट है

- **लोकतंत्र और राज्य:**

राज्य के गांधीवादी सिद्धांत का कोई भी विश्लेषण लोकतंत्र के संदर्भ के बिना अधूरा होगा क्योंकि उन्होंने एक ऐसे राज्य की कल्पना की थी जो लोकतांत्रिक होना चाहिए। अतः उनका राज्य ऊपर से नीचे तक लोकतांत्रिक है। हम कभी सक्षम नहीं होंगे;

यहां यह चेतावनी दी गई है कि लोकतंत्र के बारे में एक स्पष्ट अवधारणा तक पहुंचने के लिए यदि हम लोकतंत्र के पश्चिमी विचार के प्रकाश में इसका अध्ययन करना शुरू करें। गांधीजी लोकतंत्र को केवल एक राजनीतिक अवधारणा के रूप में नहीं देखते थे, सच्चा लोकतंत्र तभी स्थापित हो सकता है जब भारत स्वराज प्राप्त करेगा। किसी विदेशी शासित राज्य में लोकतंत्र नहीं हो सकता।

- **राज्य एवं विकेन्द्रीकरण:**

राज्य का गांधीवादी सिद्धांत न केवल स्वतंत्रता, अहिंसा, नैतिकता, न्याय और सत्य के सिद्धांतों पर बल्कि विकेंद्रीकरण पर भी आधारित है। उनके लिए स्वराज और लोकतंत्र पर्यायवाची हैं लेकिन सत्ता का विकेंद्रीकरण लोकतंत्र का मूल हिस्सा होना चाहिए। यूनानी नगर-राज्यों में राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था थी। रूसो के लेखन में हमें सत्ता के विकेन्द्रीकरण का समर्थन मिलता है। बेशक, रूसो ने सीधे तौर पर इस अवधारणा से नहीं निपटा, लेकिन खुली विधानसभा अवधारणा के लिए उनकी वकालत विकेंद्रीकरण के लिए एक आधार प्रदान करती है।

**राजनीतिक स्वतंत्रता का आर्थिक आधार**

गांधी के लिए, आर्थिक कल्याण के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अर्थहीन है। वह आजादी के बाद भी, जब तक आम लोगों की स्थिति में सुधार नहीं होता, उत्पीड़न जारी रहने के खतरे के प्रति सचेत हैं। उनके लिए, किसी भारतीय द्वारा किया गया शोषण उतना ही घृणित है जितना कि ब्रिटिश या किसी अन्य विदेशी शक्ति द्वारा किया गया शोषण। हिंद स्वराज में उन्होंने इटालियन अनुभव की तुलना भारत से करते हुए इसे समझाया है। विक्टर इमानुएल, कैवोर और गैरीबाल्डी और माज़िनी जैसे इतालवी नेताओं का जिक्र करते हुए, उन्होंने कहा कि कैवूर और गैरीबाल्डी के लिए, 'इटली का मतलब इटली का राजा और उसके गुर्गे थे' लेकिन मैज़िनी के लिए, 'इसका मतलब पूरे इतालवी लोग थे, यानी। इसके कृषक।

**निष्कर्ष**

सांस्कृतिक घटक के माध्यम से ही उचित व्यवहार और बुनियादी जीवन सिद्धांत प्राप्त कर सकते हैं। इस तथ्य के बावजूद कि सर्वोदय और बुनियादी शिक्षा पर उनके विचार आधुनिक दुनिया में पूरी तरह से प्रासंगिक नहीं हैं, हमारे राष्ट्र के लिए उनके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान को नजरअंदाज करना असंभव है। लोकतंत्र की उपलब्धि के लिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि सत्ता के विकेंद्रीकरण, धर्मनिरपेक्षता, अस्पृश्यता का निषेध और जाति व्यवस्था के उन्मूलन पर उनके सिद्धांतों को पूरी तरह से लागू किया जाए। इसमें समाजवाद भी है, जो उनके विश्वदृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण शब्द है। वह एक ऐसे विश्व की कल्पना करते हैं जो सामाजिक वर्गों से रहित हो, जहाँ कोई गरीबी, भुखमरी या बेरोजगारी न हो। यह समाजवाद का उनका संस्करण है। गांधीवादी दर्शन उन मूलभूत सिद्धांतों का स्रोत है जो सर्व शिक्षा अभियान, आयुष्मान भारत और कौशल भारत कार्यक्रम जैसी समकालीन पहलों को रेखांकित करते हैं। शब्द के हर अर्थ में, वह एक महात्मा हैं, और उनका प्राथमिक उद्देश्य हमेशा लोगों के संसाधनों को विकसित करना रहा है।

**संदर्भ**

1. "निःस्वार्थ कर्म का सुसमाचार :गांधी के अनुसार गीता", अहमदाबाद, नवजीवन, 1984, पृष्ठ9।

2. यंग इंडिया, 4दिसंबर, 1924

3. धवन गोपीनाथ, "द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी", अहमदाबाद, नवजीवन, 1951, पृष्ठ 385।

4. "गांधी मार्ग", वर्ष-2, अंक1 -4, 1958, (सर्वोदय पृष्ठ70 )

5. तंदुलकर डी.जी., "महात्मा :एम.के .का जीवन "गांधी", प्रकाशन विभाग, दिल्ली, भारत सरकार, खंड 5, पृष्ठ283

6. वर्मा वी.पी., "महात्मा गांधी और सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन", आगरा, 1965, पृष्ठ61।

7. धवन गोपीनाथ, "सर्वोदय तत्व दर्शन", नवजीवन, अहमदाबाद, 1963, पृष्ठ43।

8. हरिजन, 12नवंबर, 1938

9. प्रभु आर.के., "मेरे सपनों का भारत", नवजीवन, अहमदाबाद, 1960, पृष्ठ238।

10. महात्मा गांधी के एकत्रित कार्य, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, 1963, पृष्ठ16

11. कौशिक आशा, "नई सदी के लिए गांधी", रावत प्रकाशन, जयपुर, 2000, पृष्ठ239।

12. माथुर डी.बी., "गांधी एंड द लिबरल वसीयत", जयपुर, आलेख, 1988।

13. तंदुलकर डी.जी., "महात्मा", खंड2 , बॉम्बे कावेरी और तेंदुलकर, 1952, पृष्ठ98

14. कृपलानी जे.बी., "गांधी-द स्टेट्समैन", रंजीत पब्लिशर्स, दिल्ली, 1951, पृष्ठ95।

15. महादेव प्रसाद, "महात्मा गांधी का सामाजिक दर्शन", हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1973, पृष्ठ 126

16. संपूर्ण गांधीवादी साहित्य, खंड17 , फरवरी-जून1920 , पृष्ठ441

17. बार्कर अर्नेस्ट, "सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांत के सिद्धांत", दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1967, पृष्ठ652।

18. हरिजन, 28मार्च, 1936

19. पाठक देवव्रत एन., "गांधी का दृष्टिकोण :स्थायी शांति और सुरक्षा की खोज", गांधीवादी अध्ययन, जनवरी-जून1997 , पृष्ठ94।